IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ग्रामीण भारत के वर्ग संरचना में परिवर्तन"

डॉ. उषा नायक

सहायक प्राध्यापक

(राजनीति विज्ञान)

शासकीय पालूराम धनानिया वाणिज्य एवं कला महाविद्यालय

रायगढ़ (छ.ग.)

प्राचीन भारतीय समाज में वर्ग व जाति के आधार पर समाज विभाजित था किंतु आधुनिक युग में औद्योगिक, मषीनीकरण, नगरीकरण, आधुनिकीकरण एवं संस्कृति, नवीन शिक्षा एवं प्रजातंत्रीय शासन व्यवस्था ने भी ग्रामीण भारत को भी प्रभावित किया है नवीन वर्ग व्यवस्था ने भारत की परंपरात्मक समाज व्यवस्था में नवीन परिवर्तन उत्पन्न किया है। वर्तमान ग्रामीण भारत में जाति एवं वर्ग व्यवस्था के अलावा उच्च, मध्यम एवं निम्न वर्ग आदि रूप में दिखाई देते हैं नवीन मूल्यों और आदर्शों को जन्म दिया है।

वर्ग की उपस्थिति सार्वभौमिक है। विश्व का ऐसा कोई भी समाज ऐसा नहीं है जिसमें वर्ग न पाये जाते हैं। आधुनिक समाजों में तो स्तरीकरण का यह प्रमुख आधार है। इसीलिए ही मार्क्स कहते हैं कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, परंतु अधिक स्पष्टता आधारभूत रूप में वह एक वर्ग प्राणी है।

वर्तमान प्रजातांत्रिक राष्ट्र में वर्ग का बहुत अधिक महत्व है प्रत्येक सामाजिक वर्ग को संपूर्ण समुदाय में एक निश्चित सामाजिक पद या स्थिति प्राप्त होती है जिसमें आधार पर एक वर्ग से पृथक किया जा सकता है। परंतु इस संबंध में यह स्मरणीय है कि सामाजिक चेतना के बिना वर्ग का निर्माण संभव नहीं। जब समुदाय के किसी एक भाग के सदस्य अपने को दूसरों से पृथक समझने लगते हैं तो वर्ग का जन्म होता है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारतीय ग्रामीण समाज एक नया ने एक नया परिवर्तन देखने को मिला इसका मुख्य कारण तेजी से विकसित हो रहे भारतीय समाज प्रगति को इस प्रयास से पहले से चली आ रही व्यवस्था मान्यताऐं तकनीक आदि से सामाजिक वर्ग संस्था में परिवर्तन आया है।

जन्म से अतिरिक्त किसी भी आधार पर समाज में समूहों का निर्माण वर्ग कहलाता है। वर्ग ऐसे लोगों का समूह होता है जिन्हें समाज में एक निष्चित परिस्थिति प्राप्त है तथा जो अन्य समूहों के साथ उनका संबंध निर्धारित करती है।

परिभाषा – ऑगबर्न के अनुसार "एक सामाजिक वर्ग ऐसे व्यक्तियों का योग है, जिनकी एक दिये हुए समाज में अनिवार्य रूप से सामाजिक स्थिति होती है।"

लेपियर के अनुसार – "सामाजिक वर्ग एक सांस्कृतिक समूह है, जिसे संपूर्ण जनसंख्या में एक विशेष स्थिति अथवा पद प्रदान किया जाता है।"

सामाजिक वर्ग की विशेषताऐं:

1. समाज में वर्गों की एक श्रेणी होती है जिसमें कुछ वर्ग उच्च, कुछ वर्ग मध्यम एवं कुछ निम्नतम स्तर के होते हैं।
2. एक वर्ग के लोगों की सामाजिक परिस्थिति समान होती है।
3. प्रत्येक वर्ग की सामाजिक प्रतिष्ठा भिन्न होती है।
4. एक वर्ग के लोगों के सामाजिक संबंध प्रायः अपने ही वर्ग के लोगों का सीमित होते हैं।
5. जन्म का महत्व नहीं।
6. पूर्णतया अर्जित होती है।
7. वर्ग व्यवस्था में कम स्थिरता होती हैं।

ग्रामीण भारत में वर्ग संरचना:

डेनियल थार्नर ने गॉवों में मालिक, साहूकार तथा मजदूर इन तीन वर्गों का वर्णन किया है।

कोटोवस्की ने बुर्जुआ, पूंजीपति, भू–स्वामी, संपन्न किसान, भमिहीन किसान तथा मजदूर नामक वर्गों का उल्लेख किया है। रामकृष्ण मुखर्जी ने गाँव में प्रमुखतः तीन वर्ग बताये हैं प्रथम भू स्वामी, तथा देखरेख करने वाले किसान द्वितीय आत्मनिर्भर कृषक तृतीय साझेदारी में खेती करने वाले कृषि मजदूर तथा सेवा करने वाले।

ग्रामीण समाज में प्रमुख वर्ग :

1. जमीदार काष्तकार और सामंतवादी वर्ग – गांव की अधिकांश भूमि के मालिक इन्हीं लोग होते थे परंतु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इनका नाम भर बदल गया है और अभी भी आधी जमीन बडे लोगों के पास होती है। इसलिए इनकी सामाजिक प्रतिष्ठा भी उच्च होती है। इस वर्ग के लोग अपनी भूमि किराये पर देते हैं या फिर मजदूरों की सहायता से उस पर खेती करते हैं। इस समूह में उच्च जातियों ठाकुर, बनिया, ब्राह्मण आदि के लोग होते हैं।
2. किसान वर्ग – इस वर्ग की स्थिति गांवों में दूसरे नंबर पर आती है। इस वर्ग के लोगों के पास भूमि के छोटे–छोटे टुकडे होते हैं। ये लोग अपनी भूमि पर स्वयं ही कृषि कार्य करते हैं। पर्याप्त भूमि की कमी होने पर भूमि किराये पर लेकर भी कृषि कार्य करते हैं। इनका जीवन स्तर मध्यम होता है वर्तमान सरकारी में परिवर्तन होने के कारण, सिंचाई सुविधाओं का विकास, बीज, कीटनाशक आदि की सरलता से उपलब्धता विपणन सुविधाओं से किसानों की स्थिति में परिवर्तन आया है। किसान कृषि फार्म को व्यवसाय की तरह लेकर उनके जीवन स्तर में बदलाव आया है।
3. मजदूर तथा भूमिहीन श्रमिक वर्ग – संख्या की दृष्टि से सर्वाधिक एवं संपन्नता की दृष्टि से निम्नतम स्तर के लोगों को इस वर्ग में शामिल किया जाता है। दूसरे के खेतों पर कृषि कार्य करते थे अपनी आजीविका चलाते हैं। इस वर्ग की आय सबसे कम होती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इस वर्ग के सामाजिक आर्थिक जीवन में कोई बहुत अधिक बदलाव नहीं आया है। आज भी इनके पास अपने काम को बेचने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं होता।
4. संभ्रांत वर्ग – ग्रामीण क्षेत्रों में राजनैतिक शक्ति संपन्न संभ्रांत वर्ग का बढ़ता प्रभाव तथा मध्यम वर्गीय लोगों की बढोत्तरी ने असमानता उत्पन्न कर दिया है।

ग्रामीण भारत में वर्ग निर्माण का आधार :

1. एक व्यक्ति का जितना अधिक अधिकार संपत्ति धन या आय पर होता है उसे उतना ही उच्च वर्ग की सदस्यता प्राप्त हो जाती है इसी कारण ग्रामीण समाज में उच्च एवं निम्न वर्ग के लोग रहते हैं।
2. भारत जैसे परंपरागत समाज में परिवार तथा नातेदारी का महत्व अधिक होने के कारण उन्ही के आधार पर व्यक्ति को एक विशेष वर्ग की सदस्यता मिल जाती है।
3. ग्रामीण समाज में निवास संबंधी संस्तरण देखने मिलता है उसे और उसी संस्तरण के अनुसार उन मोहल्लों में रहने वाले व्यक्तियों की सामाजिक स्थिति की निर्धारित होती है।

4. निवास की अवधि में बहुत दिनों तक निवास करने वाले ग्रामीणों को विशेष प्रतिष्ठा होती है।
5. शिक्षा :– शिक्षा चाहे वह किसी प्रकार की क्यों न हो, व्यक्ति की बौद्धिक योग्यता या उपलब्धि की द्योतक है।ग्रामीण समाज में भी शिक्षा का बढ़ता प्रभाव वर्ग निर्माण में प्रमुख स्थान रहता है।

आधुनिक ग्रामीण भारत में वर्ग संरचना में बहुत अधिक परिवर्तन आया है। भारतीय समाज की प्रकृति व स्वरूप में पर्याप्त परिवर्तन आया है। अर्थात यंजीकरण, आधुनिकीकरण, लौकिकीकरण एवं राजनीतिकरण का कुछ न कुछ प्रभाव ग्रामीण समुदायों में हरने वाले इस वर्ग के सदस्यों पर पड़ा है। यह वर्ग भारतीय अर्थव्यवस्था की प्राण शक्ति है। इस वर्ग का (कृषक वर्ग) सदस्य एक ओर अपने खेतों में आधुनिक खादों का प्रयोग करता है। तो अपने बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने हतु शहर भेजता है और ट्रेक्टर उपयोग लाता है। चुनाव भी लड़ता है, लड़वाता है, बाल विवाह करता है आदि प्रथाऐं अभी भी विद्यमान है अर्थात भारतीय ग्रामीण वर्ग परिवर्तन के दौर से है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मुकर्जी रवीन्द्र नाथ – भारतीय समाज व संस्कृति
2. अवध प्रसाद – गाँवों में सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक परिवर्तन
3. पाण्डेय पी.एन. – ग्रामीण विकास एवं संरचनात्मक परिवर्तन
4. गुप्ता मोतीलाल – भारत में समाप्त
5. हसनैन नदीम – समकालीन भारतीय समाज
6. जोशी एस.एल., जैन पी.सी. – भारतीय समाज

सारांश

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ग्रामीण वर्ग व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन आया है। क्रांतिकारी इसलिए कि कांग्रेस जब आजादी की लड़ाई लड़ रही थी तब इसने अपने वार्षिक सम्मेलनों में बार–बार दोहराया था कि जब भारत स्वतंत्र हो जायेगा तब भूमि सुधार के क्षेत्र में बहुत बड़ा बदलाव किया जायेगा। स्वतंत्रता प्राप्त के बाद पूरा प्रयत्न किया गया कि भूमि सुधार आंदोलन को गति दी गई। इस गति ने जहां एक ओर बिचौलियों अर्थात मध्यस्थों को हटा दिया दूसरी ओर नये वर्ग को जन्म दिया। 1950 में जमींदारी प्रथा समाप्त कर दी गयी तथा सर्वप्रथम उ.प्र. में भूमि सुधार लागू किये गये। अब किसान अपना भूमि कर जमींदार को न देकर सीधा सरकारी खजाने में जमा कराता है और वास्तविक किसान खातेदार को व्यावसायिक अधिकार या भूमि स्वामित्व का अधिकार देकर एक नये वर्ग का उदय हुआ।

"अर्थशास्त्री खुसरो (1975) का कहना है भूमि सुधार आंदोलन ने गांवों के किसानों का एक नया वर्ग बनाया जिसने खेती को अब नये उद्यम के रूप में चुना।

स्वतंत्र ग्रामीण भारत में प्रमुख वर्ग हैं कृषक, व्यवसायी, खेतिहर मजदूर और दस्तकार।

कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था में कृषक वर्ग का स्थान कहीं कम नहीं हुआ है। यद्यपि आज का कृषक वर्ग तेजी से आधुनिक यंत्रों के साथ सामंजस्य बैठा लेता है उसका रहन, सहन, शिक्षा के प्रति सकारात्मक सोच, सुख सुविधाओं को अधिक महत्व देने वाला व शहरी संस्कृति से बहुत अधिक प्रभावित नजर आता है। उसका वेशभूषा षहरी लोगों जैसा होते जा रहा है।

यद्यपि ग्रामीण वर्ग में श्रमिक वर्ग जो देश के कुल जनसंख्या का बहुत अधिक प्रतिनिधित्व करते हैं स्थिति में बदलाव कम आया है। ग्रामीण खेतिहर मजदूर वर्ग श्रम के बल पर ही जीविका कमाते हैं परिश्रम के बावजूद रोटी पानी, वस्त्र एवं निवास की समस्या बनी रहती है। आधुनिक नगरों के विकास से श्रमिक वर्ग में प्रवासन देखने को जरूर मिलता है। यह वर्ग अभी भी शिक्षा से वंचित रहता है। सरकारी प्रयास के बावजूद पिछड़ा हुआ है। इस वर्ग का स्थान गांवों में सबसे नीचा होता है। परंतु यह वर्ग की वर्तमान में जमींदारी उन्मुलन, भूमि सुधार कानूनों, सामुदायिक विकास योजना, पंचायती राज व्यवस्था, ग्रामीण रोजगार गारंटी कार्यक्रम के प्रभावों से पवित्रन के दौर में और अब नवीन स्वरूप प्रकट हो रहे हैं।

ग्रामीण भारत में वर्गों का संबंध भू–स्वामित्व, कृषि एवं जाति से जुड़ा हुआ है। नयी भूमि नीतियों के फलस्वरूप नए बुर्जुआ वर्ग का जन्म हुआ है जो संपन्न कृषकों का है। जो गांवों में भूतपूर्व स्वामियों, व्यापारियों, कृषको एवं कृषि मजदूरों से भिन्न है।

आधुनिक ग्रामीण वर्ग में वैज्ञानिक ज्ञान व आधुनिक शिक्षा का असर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, किसान का बेटा इंजीनियर व मजदूर का बेटा आई एस सी बन रहा है। परंतु अभी भी ग्रामीण प्रदत्त स्थिति को अधिक महत्व देते हैं प्रकृति पर निर्भरता क्रम नहीं हुआ है। ग्रामीण भारत का स्वरूप निश्चित रूप से परिवर्तीत हो रहा है। नवीनतम आवष्यकताओं की पूर्ति करने तथा उत्पादकता व रोजगार बढ़ाने में काफी प्रगति हुई है। कृषि व तकनीकि क्षेत्र में उन्नति में देश को खाद्यान्न आत्मनिर्भरता प्रदान की है।

ग्रामीण वर्ग के बीच सायकल, मोटर साईकल एवं अन्य साधनों के विकास से परंपरागत वाहनों का उपयोग कम हुआ है। कृषक वर्ग अपने उत्पादन को मंडी तक बैलगाड़ी की जगह ट्रैक्टर में लाता है।

इन सबके बीच ग्रामीण भारत में एक वर्ग तेजी से उभर रहा है और वह है शिक्षित वर्ग या कहें बुद्धिजीवी वर्ग, जो ग्रामीण समाज मे व्याप्त बुराईयों जैसे जातिप्रथा, अस्पृष्यता, अंधविष्वास, पाखंड आदि का दूर करने एवं वैज्ञानिक तथ्यों, सरकारी योजनाओं से परिचित कराने का काम बखूबी कर रहा है यह ग्रामीण भारत के लिए शुभ संकेत है।